

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—कण्ड ३—कण-कण्ड (li)
PART II—Section 3—Sub-Section (li)

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

d. 75] No. 75] नई दिल्ली, शुक्रवार, फरवरी 8, 1991/माघ 19, 1912 NEW DELHI. FRIDAY, FEBRUARY 8, 1991/MAGHA 19, 1912

इस भाग में भिन्न पृष्ठ शंक्या की काली है जिसमें कि यह अलग संकालन की काप में रखा का सर्वे

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

पर्याबरण भीर वन मंत्रालय

(पर्यावरण, बन और वस्थजीव विभाग)

प्रधिसूचना

नर्ष निल्ली, ८ फरवरी, 1491

का. प्रा. 80(प्र) :--निम्नलिखिन प्राच्य प्रधिसूचना जिसे केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (V) धौर पर्यावरण (संरक्षण) नियम, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के खंड (क) द्वारा प्रदत्त प्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, बनाने का प्रस्ताव करती है, उक्त नियमों के नियम 5 के उपनियम (3) के खंड (ग) की ध्रपेक्षान्सार ऐसे सभी ध्र्यावित्यों की जानकारी के लिए प्रकाशित की जाती है जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है धौर यह सूचना भी थी जाती है कि उक्त प्राह्म प्राह्म प्राध्मुचना पर उस नारीख से जिसको यह राजपत्न जिसमें इस ध्रिध्मुचना (का प्रकाशन) ध्रन्तविष्ट है, जनता की उपलब्ध करा विया जाता है, साठ विन की समाप्ति के पश्चात् केन्द्रीय सरकार विधार करेगी;

2. ऐसा कोई अपित जो किसी निर्वेन्धन की धिंदरेपित किए जाने के विक्छ कोई घालीप फाइल करने में हितबदा है, वह पैरा 1 में विनि-विष्ट उक्त साठ बिन की ध्रवधि के भीतर सचिव, पर्यावरण, वन और वस्पत्तीय विभाग, पर्यावरण भवन, सी जी भी कम्पलेक्स, नई दिल्ली-110003 को लिखित रूप में ऐसा कर सकेगा।

प्राप्तप अधिस्थन।

केन्द्रीय संस्कार, पर्यावरण (संरक्षण) मिन्नियम, 1986 की धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (V) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, महाराष्ट्र सरकार के परामर्थ से, परिस्थिति विज्ञान रूप से प्रतिसंवेदनशील वहानु ताल्लुका को संरक्षित करने की प्रावश्यकता पर विचार करने के पश्चात् भीर यह सुनिश्चित करने के लिए कि विकास के क्रियाकलाप पर्यावरण संबंधी संरक्षा भीर संरक्षण के सिद्धांतों से संगत हैं, बहानु ताल्लुका, जिला थाने (महाराष्ट्र) को परिस्थिति विज्ञान रूप से क्रोमल क्षेत्र के रूप में घोषित करने की ग्रीर ऐसे उद्योगों की जिनका पर्यावरण पर हानिकर प्रभाव पड़ता है, स्थापना पर निर्वधन ग्रिधरोपित करने की प्रस्थापना करती है।

उद्योगों भौर भौद्योगिक एककों का भवस्थान या स्थल उपाबंध में दिए गए मार्गदर्शन के अनुरूप होगा । तथापि, ऐसी भौकोगिक परियोजनाओं पर को इस प्रधिसूचना के जारी किए जाने की तारीका के पूर्व उनत ताल्लुका में पहले से ही अनुमोदित या विकामान हैं, इस प्रधिसूचना से प्रभाव नहीं पड़ेगा।

महाराष्ट्र सरकार वहान ताल्लुका के विद्यमान भूमि उपयोग पर प्राधारित ताल्लुका के लिए एक मास्टर प्लान या क्षेत्रीय प्लान तैयार करेगी। यह मास्टर प्लान या क्षेत्रीय प्लान स्पष्ट रूप से सभी विद्यमान हरित क्षेत्रों, प्लोक्यानों जनजातीय क्षेत्रों धौर भ्रन्य परिस्थित विज्ञान रूप से धौतसंवेदनशील क्षेत्रों का सीमांकन करेगी। ताल्लुका के लिए मास्टर प्लान या क्षेत्रीय प्लान में ऐसे क्षेत्रों के लिए भूमि उपयोग के किसी भी परिवर्तन को धनुत्रात नहीं किया जाएगा। धनुत्रेय उद्योगों के ध्रवस्थान के लिए वहान ताल्लुका के भीतर कुल क्षेत्र अधिकतम 1000 एकड़ तक निवंत्रित होगा। श्रीक्षींगक एकक ऐसे स्थलों पर ध्रवस्थित होंगे जो पर्यावरण को वृष्टि से प्रतिप्राह्य हो भौर जिनसे कम से कम पर्यावरण का ध्रवक्रमण होता हो।

[सं. जे.-13011/24/87-आई ए] भार. राजामणि, सचिव

प्रनुबन्ध

महाराष्ट्र के थाणे जिले के दहानुतालुका में उद्योगों तथा भौद्योगिक इकाइयों को भनुमति देते/प्रतिबन्ध लगाने के लिए विशा-निर्देश

पर्यावरण और पारिस्थितिकीय आधार पर दहानु तालुका में इस प्रकार की भौकोगिक गतिविधियों की धनुमित वेने/उन पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए उद्योगों को तीन श्रीणयों में वर्गीकृत किया जायेगा, प्रचीत् हरी, नारंगी और लाल । यवि इसमें संवेह हो कि काई उद्योग किस श्रेणी में प्राता है, इस बारे में पर्यावरण भीर वन मंत्रालय को लिया जायेगा और ऐसे उद्योग को तब सक अनुमति नहीं वी जाएगी जब तक कि पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकारद्वारा उसे मंजूरी नहीं वे बी जाती

हरी श्रेणी

पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार की पूर्व मंजूरी के बिना अनुमोदित भौधोगिक क्षेत्रों में मंजूरी/नामंजूरी के लिए महाराष्ट्र सरकार की एजेंसियों द्वारा जिन उद्योगों पर विचार किया जा सकता है, उनकी सूची (अगर्ते कि निम्नलिखित गर्ते पूरी हों);

- केशल गैर-हानिकर धौर गैर-परिसंकटमय उद्योगों को मंजूरी दी जाएगी (हानिकर धौर परिसंकटमय उद्योगों में ज्यलनशील, विस्फोटक, क्षयकारी या विषाक्त पदार्थों का इस्तेमाल करने वाले उद्योग झाते हैं) ।
- प्रवृषित धीद्योगिक वहिशायों का विसर्जन न करने वाले उद्योगों की ही मंजूरी वी जाएगी।

टिप्पणी:—निम्नलिखित कार्यों या कार्य को करने वाले उद्योगों को प्रदूषित श्रीद्योगिक वहिसाक्षों का विसर्जन करने वाले उद्योग माना जायेगा, श्रर्थात्:—

एलोक्ट्रोप्लेटिंग

मालवेनाइजिंग

ब्लीचिंग

डिग्रीजिंग

फास्फेटिंग

रंगाई

फिकसिंग

वर्मगोधन

पॉलिशिग रेशों को पकाना खालों की प्राइजस्टिंग वस्तों भी डिजाइजिंग लोम हटाना, सुखाना, दिलिमिंग तथा बन्नों की घुलाई एस्कोहल का ग्रासवन, स्टिलेज बाष्पन पणुभों कावध, हड्डिया प्राप्त करना, मौस की धुलाई गमें का रस निकालना, फिल्टर करना, अपकेन्द्रण चीनी तैयार भरने के लिए भासवन, एम की संबंकों में वैकवाश फिल्टरिंग लुगदी बनाना, लुगदी प्रसंस्करण धौर कागज बनाना कोयला पकाना माक्साइडों की स्ट्रिंग हाइक्रोलिक विसर्जन के जरिए प्रयुक्त रेस की खुलाई लेटेक्स की धलाई विलायक निकालना

- 3. प्रपनी निर्माण प्रक्रिया में कोयले का प्रयोग करने वाले उद्योगों को ही मंजुरी दी जायेगी।
- केबल उन्हीं उद्योगों को मंजूरी वी जाएगी, जो बिकीर्ण प्रकार की घस्थाई उत्सर्जनों का बिसर्जन नहीं करेंगे ।

टिप्पणी :---

 अपर्युक्त शतौँ को पूरा करने पर श्रामतौर पर गैर-हानिकर, गैर-परिसंकटमय ग्रौर गैर-प्रवृथक श्रेणी में शाने वाले कुछ उणोग निम्नलिखित हैं:--

चावल मिलें, दाल मिलें, भ्रमाज मिलें (घाटा उत्पादन के लिए) सुपारी उत्पादन भीर मसाला पिसाई मूंगफली के छिलके निकालना (गुष्क) बुतशीतम संयंत्र भीर गींस भंडार

सर्फं बनाशा

मांस का परिरक्षण, कैनिंग, मछली, अस्टेशिपम भौर इसी तरह के खाद्यों का परिरक्षण तथा प्रसंस्करण

दुश्च और मनकान, भी भादि जैसे डेरी उत्पादों का निर्माण वृक्त बाइंडिंग

इस्कीर्णन, निक्षारण, अशाक बनाना

पत्थर की वस्तुओं का निर्माण, पत्थरों पर डिजाइन असाना और उन पर पालिश करना (पत्थर पिसाई/परथर उत्धानन की अनुमति नहीं दी आएमी) फ़िल, गेट, दरवाजे और खिड़की फेम, पानी के टैंक, तार के जाल आदि जैसे धातु निर्माण मनयवों का निर्माण (कोयले के प्रयोग की अनुमनि महीं दी जाएमी)

ग्रीजारों को पैना करने से संबंधिन कार्य

विद्युत उपकरणों की मरम्मक्ष

र्खीचने धाली रेहिकियो, हाथ की रेहिकियों, बैलगाड़ियों मादि का निर्माण जीवर मौर उनसे संबंधित वस्सुधों का निर्माण (बिजली का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा)

जिक्यों, दीवार विष्यों, जेवरातों की सरम्प्रत बीड़ी निर्माण हथकरचे/पावर से जलने वालें करचे, वयर्ले कि करघों की ग्रधिकत्म संक्या बारही। कदाई और सैस तथा धारियां बनामा।

परदे, मच्छरवानियां, चटाइयां, चादरें, सिकये के रिलाफ, बैग झादि जैसा कपड़े का सामान बनाना।

बने-बनाए कपड़े तथा परिधान बनाना (पूर्व-प्रोसिसग)।

सूबी और उना होजरा (पूर्व प्रोसेनिय)

हथकरधे से युनाई।

चम हे के जूतों तथा चम हे के सामान का निर्माण।

(टैनिंग तथा हाइड प्रोसेसिंग के प्रतिरिवन)

जूते की फीते बनाना।

र्णाशों तथा फोटो-फेमो का निर्माण।

वाध-उपकरणों का निर्माण।

खेल-कृष के सामान का निर्माण।

खांस तथा बेंत के मामान का निर्माण (केवल ड्राई-आँपरेशन)

कार्ड-कोर्ड मीर कारक का सामान बनाना (कारक सथा लुगदी के सामान के मतिरिक्त)

पृथक्षकरण तथा श्रन्य कोटेड पेपर (कागज तथा लुगदी के सामान के ग्राप्ति-रिक्त)।

वैज्ञानिक भीर गणितीय उपकरणों का निर्माण।

फर्नीचर का निर्माण (केबल लकड़ी का)

घरेल बिजली तथा इलेक्ट्रानिक उपकरणों का सज्जीकरण।

लिखने के साभान का निर्माण (पेन, पेसिटा आदि)

पोलोबीन, प्लास्टिक तथा पी.वी.सी. की चे.जो की एकस्ट्रजन (मॉल्डिंग) शस्य जाली तथा पट्टियों का निर्माण।

कंकीट की रेलवे ह्लं,परों का निर्माण ।

सूती कपड़े की कताई भौर बुनाई (केवल ट्राई-प्रोसेनिंग)

रस्सियों का निर्माण (सूत, चूट प्लाहिटक)

कामीन बुनाई।

सारों भीर पाइपों का निर्माण (नॉन-एस्बेहटॉस)

एक्स्ट्रूजन भाफ मेटल।

बिजली तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणो का सज्जीकरण ।

कॉयर इंडस्ट्रीज ।

(जलीने

मोमबलियां भीर भगरबलियां।

भौयल-शिनिय भौग एक्सेपलिंग (कोई हाइड्रोजनेशन तथा परिष्करण नहीं) भाइस-कीम बनासा।

श्विमिज-जल बनाना।

टुंकों भौर सूटकेसों का निर्माण।

स्टेशनरी की मद्दों का निर्भाण।(कागज भौर स्वाही के स्रतिरिक्त) सास्टीकल क्रेमों का निर्माण।

इस सुची में उद्योगों को सुविधा के लिए प्रामिल किया गया है भीर यदि किसी गामले में वे उपर्युक्त खेली में नहीं आते तो उन्हें नारंगी नथा लाल केणियों में रखा जाएगा। नारंगी श्रेणी:

जन ज्योगों की सूची, िक्हें पर्यावरण भीर यन संद्वालय द्वारा भनु-मोदित उपर्युक्त पर्यावरणीय मूर्याकन भीर पर्याव्य प्रभूषण नियंत्रण उपायों के साथ बहानु तालुका में भसाने की भनुमति दी जा सकती है।

मृत्तिका--शिल्प (सेरंभिक्स)

सफ:ई के बर्तन

आटा चिकायां

तेलों से विलायया प्रव्य निकालने समेत वयस्पति घो

साबुन (वाप्प मध्यन प्रक्रिया के बिना)

ांसथेटिक डिटरजेंट **ब**नाना (नॉन-फ.स्फेटिक)

बाष्प पैदा करने वाले संयंस्र (कोयला/कांक के बिना)

कार्यालय भ्रीर घरेलू फर्नीचर तथा उपकरणों का निर्माण।

मशीनरी तथा मणीन भीजारो श्रीर उपकरणों का निर्माण।

ग्रीद्योगिक गैसी का निर्माण (केवल नाइट्रोजन, श्राक्सीजन ग्रीप कार्यन डाई. ग्राह्म(इट)

कोयला/कोक के मलाबा ईंधन का इस्तेमाल करने थाले

ग्लासबैधर

प्राप्टिकल ग्लास

प्रयोगभाला का सामान

प्रोफेलेक्टिक्स भीर सेटेक्स उत्पादों को छोड़कर

सजिकल ग्राँट मेक्किल उत्पाद

रमध्ये के जूते

बेकरी उत्पाद, बिस्कुट ग्रांट कन्फेक्शनरी

इस्टेंट चाय/कॉफा

मास्ट खः च

वंपीं कंप्रेशरों, प्रणीवन, गूनिटों, भग्नि उपशमन उपकरणों भादि का निर्माण।

बायर कु:इंग (शीत प्रक्रिया), बायर नेल्स, बालिंग स्ट्रेप्स,

स्ट⊹ल फर्नीचर

चिकित्सा भीर शस्य चिकिस्सा उपकरण

सुगंध, सुरस भीर भोज्य संयोजी

कार्वनिक पौधा पोषक

वासित जल/सापट् ब्रिक्स

उपरोक्त श्रेणी में धाने वाले ३ करोड़ रुपये से भिक्त परिच्यय अले उद्योगों को भारत सन्कार के पर्यावरण एवं बन मंत्रालय के विचारार्थ भेजा जाएगा।

सास श्रेणी

उन उद्योगों की भूकी, जिनको दहानु सालुका में चलाने की मनुमति नहीं थी जा सकती हैं :--

इन श्रेणी में शाने वाले उद्योगों को श्रेणी में निम्नलिखित शामिल हैं:---हलाई खानों ग्रीर मिश्रधातु बनाने की प्रक्रिया में शामिल धातु विकानी उद्योग कोयला भीर अन्य खनिज प्रसंस्करण उद्योग

सीमट संयंत

कोयला/कोक के उपयोग पर बाधारित उद्योग

तेल मोधक कारख ने

पेट्रो-रसायन उद्योग

संश्लिष्ट रखड़ विनिर्माण

ताप और नाभिकीय विश्वत संयंत्र

भीकोणिक प्रयोजनों के लिए अनस्पति, हाइड्रोजेनेटेंड अनस्पति तेलों का विनिर्माण

भोनीः मिलें

कागज भीर ल्वदं का उत्पादन (भवाबारं कागज सहित)

कोक श्रोबन्त के सह-उत्पाद श्रोर कोल तारकोल

मासवन उत्पादों का विनिर्माण

भएकालिस भीर एसिडस

विद्युत् नाप उत्पादी (कृतिम प्रपश्चि, केल्सियस कार्वाइड इस्पादि जैसे)

फास्फोरस भीर इसके गीगिक

नाइट्रोजन योगिक

बिस्फोटक

फायर केकर्स

तालिक अत्रहाइड्र इड

क्लोर/कृत हाइड्रो-कार्येन वाली प्रक्रियांएं

क्तोरात, पनोरात, क्रोतंत, ब्रामोझात और उपके मौतिक केमिकला फटींलाइ-जर्स जियेटिक फाइबर्स अप् रेयोन

सिन्थे*िम|क टनामं | ६ टानुनाम |ज चनाम | सूंद*ानाम*े । इत्यादि का* प्रक्षिपादन भीर निर्माण ।

मालिक भीषधियां।

एल्हाहल

पराभी की खाल, चनड़ा भाषि का संसाधक मोर प्रसंस्करण

कोदा बनाता, कोतले का द्वार काण

जनाने क नैस का विजिनीय

फाइपर रजात अस्यादन या प्रापंसकरण

रो।ई मोर उर्ज इंटर्ज डिएट्स

माधीशिक कार्यन भीर कार्यन उत्पाद

बिग्रातु-:सायन भीर उनके उत्पाद

वेंट्रा, इतेमज मोट कार्जिस

पोतः विष्ठतं सतोराहड

पोत्रे: प्रोपाइल न

कनोरेटा, पार्वनोरेटात मो : नैरोनताहरू

पोलिश

सिथेटिक रेजिन्त

प्लास्टिक

एस्बेस्टॉस

टिष्पणे : जो 'उद्योग कार दर्शाय' गई ती मों श्रीणयों में से किसी में भी नीई घाते जाने वर्गीकरण के मामले में निर्णय तीन करोड़ से क्षम परिष्यय वाली परियोजनाओं के लिए राज्य सरकारों द्वारा लिया जाएगा छोर घन्य मामलों को पर्यावरण और बन मेहालय, भारत सरकार को भेजेगा। MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS (Department of Environment, Forests and Wildlife)

New Delhi, the 8th February, 1991

S.O. 80(E).—The following draft notification which the Central Government proposes to make in exercise of the powers conferred by clause (v) of sub-section (2) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) and clause (a) of sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, is hereby published as required by clause (c) of sub-rule (3) of rule 5 of the said rules for the information of all persons likely to be affected thereby and notice is also hereby given that the said draft notification will be taken into consideration by the Central Government on the expiry of sixty days from the date the Official Gazette containing (the publication of) this notification is made available to the public;

2. Any person intertsted in filing any objection against the imposition of any restriction, may do so in writing to the Secretary, Department of Environment. Forests and Wildlife, Paryavaran Bhawan, CGO Complex, New Delhi-110003, within the said period of sixty days specified in paragraph 1.

DRAFT NOTIFICATION

In exercise of powers conferred by clause (v) of sub-section (2) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government, in consultation with the Government of Maharashtra, after considering the need for protecting the ecologically sensitive Dahanu Taluka, and to ensure that the development activities are consistent with principles of environmental protection and conservation, hereby proposes to declare Dahanu Taluka, District Thane (Maharashtra) as an ecologically fragile area and to impose restrictions on the setting up of industries which have detrimental effect on the environment.

The location or siting of industries and industrial units shall be in conformity with the Guidelines given in the Annexure.

However, the industrial projects already approved or in existence in the said Taluka before the date of issue of this notification, will not be affected by this Notification.

The Government of Maharashtra will prepare a Master Plan or Regional Plan for the Taluka based on the existing land use of Dahanu Taluka. This Master Plan or Regional Plan will clearly demarcate all the existing green areas, orchards, tribal areas and other environmentally sensitive areas. No change of land use will be permitted for such areas in the Master Plan or Regional Plan for the Taluka. The total area within the Dahanu Taluka for location of permissible industries will be restricted to a maximum of 1000 acres. The industrial units will be located at sites that are environmentally acceptable and which will result in the minimum amount of environmental degradation.

[No. J-13011|24|87-IA]
R. RAJAMANI, Secv.

ANNEXURE

GUIDELINES FOR PERMITTING RESTRICTING INDUSTRIES AND INDUSTRIAL UNITS IN THE DAHANU TALUKA, THANE DISTRICT IN MAHARASHTRA

Industries will be classified under three categories, viz. Green, Orange and Red as shown below for purposes of permitting restricting such industrial activities in Dananu Tatuka on the basis of environmental and ecological considerations. In case of doubt as to the category in which the industry falls, a reference snall be made to the Ministry of Environment & Forests, Government of India, and such industry will not be permitted until cleared by the Ministry of Environment & Forests, Government of India.

GREEN CATEGORY

List of industries that can be considered by the Maharashtra Government agencies for approval rejection in approved industrial areas without prior approval of the Ministry of Environment & Forests, Government of India (provided that all the following conditions are satisfied):

- 1. Only those industries that are non-obnoxious and non-hazardous will be permitted. (Obnoxious and hazardous industries include those using inflammable, explosive, corrosive or toxic substances).
- 2. Only those industries that do not discharge industrial effluents of a polluting nature will be permitted.

Note:—Industries that undertake any of the following processes or process of similar nature shall be regarded as industries that discharge industrial effluents of a polluting nature, namely:—

Electroplating.

Galvanizing.

Bleaching.

Degreasing.

Phosphating.

Dyeing.

Pickling.

Tanning.

Polishing.

Cooking of fibres,

Digesting of hides.

Desizing of fabrics.

Removal of hair, soaking, deliming and washing of fabric.

Distillation of alcohol, Stillage evaporation.

Slaughtering of animals, rendering of bones, washing of meat.

Crushing of sugarcane, filtration, centrifugation, distillation for extraction of sugar.

Filtering backash in D.M. Plants.

Pulp making, pulp processing and paper making. Coking of coal.

Stripping of oxides.

Washing of used sand by hydraulic discharge.

Washing of latex.

Solvent extraction.

- 3. Only those industries that do not use coal in their manufacturing process will be permitted.
- 4. Only those industries that do not emit fugitive emissions of a diffused nature will be permitted.
- 1. Some of the industries that ordinarily fall in the non-obnoxious, non-hazardous and non-polluting category, subject to fulfilment of the above conditions are:—

Rice Mills, Dal Mills, Grain Mills (for production of flour).

Manufacture of supari and masala grinding.

Groundnut decorticating (dy).

Chilling Plants and cold storages.

Ice making.

Preservation of Meat, canning, preserving and processing of fish, crustaceous and similar foods.

Manufacture of milk and dairy products such as butter, ghee, etc.

Book binding.

Engraving, etching, blockmaking.

Manufacture of structural stone goods, stone dressing and polishing (stone crushing|stone quarrying will not be permitted).

Manufacture of metal building componens such as grills, gates, doors and window frames, water tanks, wire nets, etc. (use of coal not permitted).

Tool sharpening works.

Repairs of electrical appliances.

Manufacture of push carts, hand carts, bullock carts, etc.

Manufacture of jewellery and related articles (no power to be used).

Repairs of watches, clocks, jewellery.

Manufacture of bidis.

Handlooms Powerlooms, subject to a maximum of 4 looms.

Embroidery and the making of laces and fringes.

Manufacure of made up textile goods such as curtains, mosquito nets. mattresses, bedding material, pillow cases, bags, etc.

Ready-made garments and Apparel making (dry processing).

Cotton and woolien hosiery (dry processing).

Handloom weaving.

Manufacture of leather foot wear and leather products (excluding tanning and hide processing).

Shoe lace manufacturing.

Manufacture of mirrors and photoframes.

Manufacture of musical instruments.

Manufacture of sports goods.

Manufacture of bamboo and cane products (dry operations only).

Manufacture of cardboard and paper products (Paper and pulp manufacture excluded).

Insulation and other coated papers (Paper and pulp manufacture excluded).

Manufacture of scientific and mathematical instruments.

Manufacture of furniture (wood only).

Assembly of domestic electrical and electronic appliances.

Manufacture of writing instruments (pens, pencils, etc.).

Extrusion moulding of polythene, plastic and PVC goods.

Manufacture of surgical gauzes and bandages.

Manufacture of concrete railway sleepers.

Cotton spinning and weaving (dry processes only).

Manufacture of ropes (cotton, jute, plastic).

Carpet weaving.

Manufacture of wires and pipes (non-asbestos).

Extrusion of metal.

Assembly of electric and electronic equipment.

Coir industries.

Toys.

Wax candles and agarbatis.

Oil-ginning and expelling (no hydrogenation and no refining).

Manufacture of ice-cream.

Manufacture of mineral water.

Manufacture of trunks and suitcases.

Manufacture of stationery items (except paper and inks).

Manufacture of optical frames.

2. The inclusion of industries in this list is for convenience and if in a given case they do not fall in the above category they will be treated as in the Orange or Red Categories.

ORANGE CATEGORY

Iist of Industries that can be permitted in Dahanu Taluka with proper Environmental Assessment and adequate Pollution Control Measures in sites that have been approved by the Ministry of Environment & Forests, Government of India.

Ceramics.

Sanitryware.

Flour mills.

Vegetable oils including solvent extracted oils

Soap (without steam boiling process).

Formulation of synthetic detergents (non-phosphatic.

Steam generating plants (without coal|coke).

Manufacture of office and household furniture and appliances.

Manufacture of machinery and machine tools and equipment.

Manufacture of industrial gases (only Nitrogen. Oxygen and CO²).

Glassware using fuel other than coal coke.

Optical Glass.

Laboratoryware.

Surgical and medical products excluding prophylactics and latex products.

Rubber Foot wear.

Bakery products, biscuits and confectionery.

Instant tea coffee.

Malt foods.

Manufacture of pumps, compressors, refrigeration units, fire fighting equipment, etc.

Wire drawing (cold process), Wire Nails, Baling straps.

Steel furniture.

Medical and surgical instruments.

Fragrances, flavours and food additives.

Organic plant nutrients.

Aerated waters soft drinks.

Industries falling within the above category with an outlay not exceeding Rs. 3 crores will have to be referred to the Ministry of Environment & Forests, Government of India for consideration.

RED CATEGORY

List of Industries that cannot be permitted in Dahanu Taluka.

The illustrative list of industries that fall within this category include:—

Metallurgical industries including foundries and alloy making processes.

Coal and other mineral processing industries.

Cement Plants.

Industries based on the use of coal|coke.

Refineries.

Petrochemical industries.

synthetic Rubber Manufacture.

Thermal and nuclear power plants.

Manufacture of vanaspati hydrogenerated vegetable oils for industrial purposes. Sugar Mills.

Manufacture of paper and pulp (including newsprint).

Manufacture of by-products of coke ovens and coal tar distillation products.

Alkalis and acids.

Electro-thermal products (such as artificial abrasives, calcium carbide, etc.)

Phosphorus and its compounds.

Nitrogen compounds.

Explosives.

Fire-crackers.

Pthalic anhydride.

Processes invloving chlorinated hydrocarbons.

Chlorine, fluorine, bromine, iodine and their compounds.

Chemical fertilizers.

Synthetic fibres and rayon.

Manufacture and formulation of synthetic pesticides insecticides bactericides fungicides etc.

Basic drugs.

Alcohol.

Tanning and processing of animal skins, hides, leather, etc.

Making of coke, Liquefaction of coal.

Manufacture of fuel gas.

Fibre glass production or processing.

Dyes and their intermediates.

Industrial carbon and carbon products.

Electro-chemicals and their products.

Paint, enamels and varnishes.

Poly vinyl chloride.

Polypropylene.

Chlorates, perchlorates and peroxides.

Polishes.

Synthetic resins.

Plastics.

Asbestos.

Note:—In case of industries which do not fall in any of the above mentioned three categories, decision in regard to their classification will be taken by the State Government for those projects having an outlay not exceeding Rs. 3 crores and for others reference is to be made to the Ministry of Environment & Forests, Government of India.